Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(*https://jetjournal.us/*)
Volume 16, Issue 1 – 2026

UGC CARE I

भारत-म्यांमार सीमा व्यापार- आर्थिक सहयोग और क्षेत्रीय सामरिक प्रभावों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

भीष्म *
शोधार्थी
राजनीति विज्ञान विभाग
ओम स्टर्लिंग ग्लोबल यूनिवर्सिटी
हिसार

डॉक्टर शैलेंद्र कुमार सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर
राजनीति विज्ञान विभाग
ओम स्टर्लिंग ग्लोबल यूनिवर्सिटी
हिसार

Mail ID Bhishamscholar@gmail.com

शोध सारांश

इस शोधपत्र का उद्देश्य भारत और म्यांमार के बीच सीमा व्यापार की प्रकृति का विश्लेषण करना है। भारत तीव्र आर्थिक विकास, भौगोलिक आकार, प्राकृतिक संसाधनों और गतिशील जनसंख्या के साथ एक उभरती हुई शक्ति है। इसने म्यांमार सहित अपने दक्षिण-पूर्व एशियाई सीमावर्ती पड़ोसियों के प्रति एक नई विदेश नीति और आर्थिक अभिविन्यास अपनाया है। वर्तमान परिदृश्य भारत और म्यांमार के बीच बढ़ते व्यापार संबंधों और द्विपक्षीय आर्थिक जुड़ाव को प्रकट करते हैं। भारत के पूर्वोत्तर सीमा मुद्दे, आसियान संपर्क, बीआरआई का बीसीआईएम आर्थिक गलियारा, भारत की पड़ोस नीति, पूर्व की ओर कार्य नीति, साथ ही भू-राजनीतिक गतिशीलता, अन्य कारकों के अलावा, भारत-म्यांमार सीमा व्यापार को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक हैं। चीन-भारत प्रतिद्वंद्विता, कमज़ोर सीमावर्ती बुनियादी ढाँचे और जातीय विद्रोह जैसी समस्याएँ सीमा व्यापार में प्रमुख बाधाएँ बनकर उभरी हैं। इस अध्ययन का निष्कर्ष है कि भारत और म्यांमार सीमा पार व्यापार और आर्थिक सहयोग में में समकालीन समय में क्या परिस्थितिया बनी हुई हैं।

मुख्य शब्द: - आर्थिक सहयोग, आसियान, सीमा व्यापार, 'एक्ट ईस्ट', 'नेबरहुड फर्स्ट', बीआरआई ।

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

प्रस्तावना

भारत म्यांमार के साथ आध्यात्मिक, ऐतिहासिक, भाषाई और जातीय, सांस्कृतिक और धार्मिक संबंध साझा करता है। भगवान बुद्ध की भूमि होने के नाते, तथा म्यंमार में बुद्ध धर्म के लोगो की बहुलता के कारण भारत म्यांमार के लोगों के लिए एक तीर्थस्थल है। बौद्ध धर्म के प्रसार ने दोनों देशों के सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत किया। यह भारत से सटा एकमात्र आसियान देश है और इसलिए, दक्षिण पूर्व एशिया का प्रवेश द्वार है। भारत अपनी 'एक्ट ईस्ट' और 'नेबरहुड फर्स्ट' नीतियों के अनुरूप म्यांमार के साथ अपने सहयोग को बढ़ाने का प्रयास कर रहा है। भारत चार उत्तर-पूर्वी राज्यों - अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, मणिपुर और मिज़ोरम - में म्यांमार के साथ 1643 किलोमीटर लंबी सीमा साझा करता और बंगाल की खाड़ी में एक समुद्री सीमा साझा करते हैं। ऐतिहासिक रूप से, भारत और म्यांमार के बीच संबंध सदियों पुराने हैं और इनमें धार्मिक, वाणिज्यिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान शामिल रहा है। ब्रिटिशकाल में दोनों देशों के बीच प्रशासनिक और सामरिक संबंध भी विकसित हुए, क्योंकि तत्कालीन समय में म्यांमार भारत का एक भाग था । स्वतंत्रता के बाद भी, दोनों देशों ने अपनी पारंपरिक मित्रता और सहयोग बनाए रखा है। सांस्कृतिक रूप से भी भारत और म्यांमार के बीच भिन्न-भिन्न जातीय और आदिवासी समूहों के सांझा रीति-रिवाज, भाषाएँ, और धर्म होने के कारण गहरा अंतर्संबंध है। भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्रों में रहने वाले कई समुदायों की सांस्कृतिक पहचान म्यांमार के आदिवासी समुदायों के साथ मेल खाती है। इसके अतिरिक्त, म्यांमार में भी भारतीय मूल के लोग और उनकी सांस्कृतिक विरासत मौजूद है, जो इन देशों के सामाजिक संबंधों को और प्रगाढ़ बनाती है। वर्तमान समय में भी भारतीय मूल की एक बड़ी आबादी गृह मंत्रालय भारत सरकार के अनुमान अनुसार लगभग 25 लाख म्यांमार में रहती है । भारत आसियान के साथ व्यापार, निवेश और अन्य प्रकार के आर्थिक सहयोग को मज़बूत करना चाहता है, म्यांमार एक आवश्यक रणनीतिक साझेदार है, क्योंकि यह एकमात्र आसियान राष्ट्र है जिसके साथ भारत भूमि और समुद्री दोनों सीमाएँ साझा करता है।

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: 2168-2259 (online)
(https://jetjournal.us/)
Volume 16, Issue 1 – 2026

JOURNAL OF EAST-WEST THOUGHT

UGC CARE I

भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र (NER) के आर्थिक विकास और क्षेत्रीय एकीकरण की दृष्टि से म्यांमार अत्यंत रणनीतिक महत्व रखता यह उत्तर-पूर्वी क्षेत्र को दक्षिण-पूर्व एशियाई बाज़ारों एवं अवसरों से जोड़ने की ठोस आधारशिला प्रदान करती है। भारत अपने "निकट और विस्तारित पड़ोस" के साथ संपर्क बढ़ाने पर भी सक्रिय रूप से काम कर रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के शब्दों में, भारत के अंतर्राष्ट्रीय जुड़ाव के मार्ग में "संपर्क का पुनर्निर्माण, पुलों की बहाली और भारत को हमारे निकटवर्ती एवं विस्तृत भौगोलिक क्षेत्रों से फिर से जोड़ना" शामिल है। जिसके अनुसार "भारत की व्यापक संपर्क दृष्टि में विकास साझेदारियाँ शामिल हैं जो हिंद महासागर और प्रशांत महासागर के द्वीपों से लेकर कैरिबियन के द्वीपों तक और अफ्रीका महाद्वीप से लेकर अमेरिका तक फैली हुई हैं।"

वर्तमान में दो प्रमुख नीतिगत पहल -एक्ट ईस्ट नीति और नेबरहुड फर्स्ट नीति - भारत के प्रयासों के प्राथमिक चालक हैं ताकि उसकी सीमा पार के देशों और क्षेत्रों के साथ संपर्क में सुधार और वृद्धि हो सके। क्षेत्रीय परिदृश्य में आसियान देशों के साथ भारत के आर्थिक और राजनीतिक संबंधों को मज़बूत करने के उद्देश्य से 1991 में लुक ईस्ट नीति शुरू की गई थी। धीरे-धीरे इस नीति में जापान, कोरिया गणराज्य और चीन के साथ भारत के जुड़ाव शामिल हो गए और हाल के वर्षों में, एशिया प्रशांत क्षेत्र में भारत की पहुँच ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड और प्रशांत द्वीपीय देशों तक फैल गई है। 2014 में इसे एक्ट ईस्ट नीति में उन्नत किया गया

जिससे भारत के पूर्व के देशों पर भारत के ध्यान को और गहरा करने के लिए एक अधिक कार्य-उन्मुख नीति की आवश्यकता पर बल दिया गया। साथ ही, इस नीति को भारत के उत्तर पूर्वी क्षेत्र (एनईआर) के लिए नई आर्थिक विकास रणनीति के रूप में तेज़ी से पेश किया जा रहा है और नीति का उद्देश्य दक्षिण पूर्व एशिया के साथ इस क्षेत्र का आर्थिक एकीकरण है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए "3 सी - वाणिज्य, संपर्क और संस्कृति" (3C- Commerce, Contacts and Culture) पर ज़ोर दिया गया है।

भारत और म्यांमार, बांग्लादेश, भूटान, श्रीलंका, थाईलैंड और नेपाल के साथ-साथ बंगाल की खाड़ी बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग पहल (BIMSTEC) के भी सदस्य हैं, और

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

साथ ही बांग्लादेश-चीन-भारत-म्यांमार क्षेत्रीय सहयोग मंच (BCIM) के भी सदस्य हैं। म्यांमार भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र (एनईआर) के आर्थिक विकास की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत चार उत्तर-पूर्वी राज्यों, अर्थात् अरुणाचल (520 किमी), नागालैंड (215 किमी), मणिपुर (398 किमी) और मिज़ोरम (510 किमी) के साथ 1643 किमी लंबी सीमा साझा करता है। यह भौगोलिक निकटता भारत के अब तक आर्थिक रूप से अलग-थलग रहे पूर्वोत्तर राज्यों को पूर्व में आर्थिक अवसरों और बाज़ारों से जुड़ने का अवसर प्रदान करती है, जो म्यांमार के साथ उनके मज़बूत ऐतिहासिक, सामाजिक-सांस्कृतिक और आर्थिक संबंधों का आधार बनता है। वास्तव में यह व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है कि भारत और म्यांमार के बीच सीमा व्यापार में वृद्धि से उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में विकास को बढ़ावा मिलेगा:

1) क्षेत्र में आर्थिक गतिविधियों में वृद्धि होगी जिससे रोज़गार में वृद्धि होगी और गरीबी के स्तर में कमी आएगी

2) युवाओं को उग्रवाद से दूर करके उत्पादक रोज़गार की ओर ले जाया जाएगा, साथ ही शिकायतों के शांतिपूर्ण समाधान के पक्ष में हितधारकों के आधार का विस्तार होगा।

इस प्रकार, म्यांमार न केवल भारत की *एक्ट ईस्ट नीति* के भू-रणनीतिक लक्ष्यों के लिए बल्कि उत्तर-पूर्वी राज्यों के आर्थिक पुनरुत्थान, क्षेत्रीय संपर्क विस्तार, और समग्र एशियाई आर्थिक एकीकरण में भी एक अपरिहार्य साझेदार के रूप में स्थापित है।

विषय चयन का औचित्य और महत्व

इस शोधपत्र के लिए अत्यंत प्रासंगिक और आवश्यक है क्योंकि भारत और म्यांमार के बीच सीमा व्यापर क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग, सुरक्षा संरचनाओं और सामरिक सामंजस्य के महत्वपूर्ण पहलुओं से जुड़ा हुआ है। इस क्षेत्र में व्यापारिक संबंधों का विस्तार न केवल दोनों देशों के आर्थिक विकास में सहायक है, बल्कि यह दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशियाई भू-राजनीतिक स्थिरता और सहयोग के लिए भी अनिवार्य है। वर्तमान वैश्विक एवं क्षेत्रीय परिदृश्य में, सीमापार व्यापार को प्रभावित करने वाले कारक जैसे कि अवसंरचना की समस्याएं, सुरक्षा

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

चुनौतियाँ तथा क्षेत्रीय विरोधाभासों का विश्लेषण करने से नीतिगत सुधारों एवं सहयोग के नए अवसरों की पहचान संभव हो पाती है। भारत की "पड़ोसी पहले" नीति तथा अंतिम सीमांत क्षेत्रों में आर्थिक और रणनीतिक भागीदारी की भूमिका को समझना, म्यांमार के साथ द्विपक्षीय संबंधों की मजबूती के लिए आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, चीन-भारत प्रतिस्पर्धा, ASEAN संपर्क, और बीआरआई जैसे बड़े भू-राजनीतिक कारकों का सीमा व्यापार पर प्रभाव स्पष्ट करना क्षेत्रीय सामरिक गतिशीलता का व्यापक चित्र प्रस्तुत करता है। इसलिए, इस शोध का विषय न केवल आर्थिक पहलू पर केंद्रित है, बल्कि इससे क्षेत्रीय शांति, सुरक्षा और समग्र सामरिक हितों की समझ भी विकसित होती है, जो क्षेत्रीय सहयोग व विकास के लिए मार्ग प्रशस्त करता है। इसी कारण इस विषय का चयन शोध के लिए अत्यंत उपयुक्त और महत्वपूर्ण माना गया है।

भारत-म्यांमार सीमा व्यापार की वर्तमान स्थिति

भारत और म्यांमार के बीच सीमा व्यापार 1994 में शुरू हुए 'Border Trade Agreement' के तहत होता है और साल दर साल इसमें उतार-चढ़ाव आते रहे हैं। दोनों देशों के बीच व्यापार संबंधों को मजबूत करने के लिये विभिन्न संयुक्त समितियाँ बनाई गई हैं, जिनमें सीमा व्यापार को बढ़ाने और इसे रुपये-क्याट (स्थानीय मुद्राएँ) में निपटान की दिशा में भी काम हो रहा है। हाल ही में सीमा व्यापार को फिर से सक्रिय करने, वैकल्पिक मार्गों को खोलने, और MSME, टेक्सटाइल, बिजली, शिपिंग आदि क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने पर भी चर्चा हुई है। 2024 में भारत द्वारा म्यांमार से कुल आयात 1.52 अरब डॉलर जिसमे प्रमुख वस्तुएं: खाद्य सब्जियाँ व कंद (1.21 अरब डॉलर), अनाज (118.3 मिलियन डॉलर), मछली व समुद्री उत्पाद (46 मिलियन डॉलर), फल व मेवे, लकड़ी, रबर, चाय-कॉफी, कपड़े आदि। 2024 में भारत द्वारा म्यांमार को कुल निर्यात: 609.18 मिलियन डॉलर रहा। जिसमे प्रमुख वस्तुएं: पशुजन्य उत्पाद (185.38 मिलियन डॉलर), औषधि (178.39 मिलियन डॉलर), वाहन, मशीनरी, इलेक्ट्रॉनिक्स, कपास, तंबाकू, ऑर्गेनिक केमिकल्स आदि शामिल थे। भारत-म्यांमार सीमा व्यापार की वर्तमान स्थिति में हाल के वर्षों में निरंतर वृद्धि देखी गई है। वित्तीय वर्ष

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 16, Issue 1 – 2026

2024-25 में दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार लगभग 2.1 अरब अमेरिकी डॉलर तक पहुंच गया है, जो पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 24% की वृद्धि दर्शाता है।

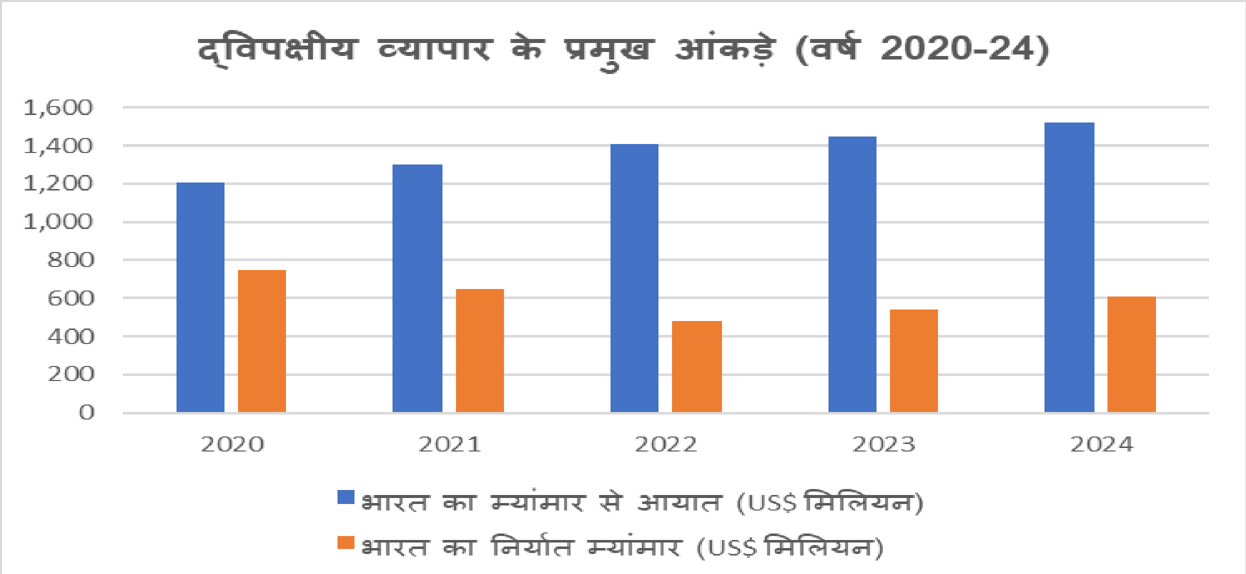

नोट: ऊपर दिया गया डेटा UN COMTRADE और भारत सरकार के संबंधित पोर्टल्स जैसे ट्रेडिंग इकोनॉमिक्स के माध्यम से संकलित है।

इस व्यापार में म्यांमार की निर्यात करीब 1.533 अरब डॉलर और भारत के निर्यात लगभग 614 मिलियन डॉलर हैं। भारत मुख्य रूप से म्यांमार को फ़ार्मास्युटिकल्स, खाद्य सामग्री, मशीनरी, वाहन और विद्युत उपकरण निर्यात करता है, जबकि म्यांमार से भारत के लिए दलहन, लकड़ी, जूट और कृषि उत्पाद प्रमुख आयात हैं। भारत, म्यांमार का चौथा सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार बन गया है और म्यांमार में लगभग 783 मिलियन डॉलर का निवेश भी कर चुका है। सीमा व्यापार को बढ़ावा देने के लिए भारत और म्यांमार ने रुपये-क्यात मुद्रा विनिमय प्रणाली भी लागू की है, जिससे व्यापारिक लेनदेन में आसानी हुई है। इसके अलावा, भारत की 'एक्ट ईस्ट' नीति और भारत-एशिया के बीच त्रिपक्षीय हाईवे परियोजना सीमा व्यापार को और भी सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। हालांकि, सीमा व्यापार की अधिकतर गतिविधि अभी भी अनौपचारिक है, और औपचारिक व्यापार को बढ़ाने के लिए बुनियादी ढांचे, सुरक्षा चुनौतियां और प्रशासनिक प्रक्रियाओं में सुधार की आवश्यकता बनी हुई है। कुल मिलाकर, भारत-म्यांमार सीमा व्यापार तेजी से विस्तार की ओर अग्रसर है, जिसमें

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

औपचारिक और अनौपचारिक दोनों तरह के व्यापार शामिल हैं, जो क्षेत्रीय सहयोग और आर्थिक विकास के लिए सकारात्मक संकेत हैं।

व्यापारिक वस्तुएँ और मात्रा

भारत और म्यांमार के बीच व्यापार में प्रमुख वस्तुओं की विविधता देखने को मिलती है। भारत से म्यांमार को निर्यात की जाने वाली मुख्य वस्तुएं फार्मास्यूटिकल उत्पाद, पशुजनित उत्पाद, अनाज, खाद्य सामग्री, मशीनरी, वाहन, विद्युत एवं इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, कपड़े, जूट उत्पाद आदि हैं। विशेष रूप से फार्मास्यूटिकल उत्पादों का निर्यात महत्वपूर्ण है, जिसमें भारत ने म्यांमार के बाजार में लगभग 60% हिस्सेदारी हासिल की है। वहीं, म्यांमार से भारत के लिए प्रमुख आयात में दलहन (जैसे मसूर, उरद, अरहर), लकड़ी और उसके उत्पाद, कृषि उत्पाद (जैसे काली मिर्च, अदरक, सुपारी), तथा अन्य प्राकृतिक संसाधन शामिल हैं। 2024-25 के वित्तीय वर्ष में भारत म्यांमार के साथ लगभग 2.1 अरब अमेरिकी डॉलर व्यापार कर रहा है। म्यांमार से भारत के लिए दलहन प्रमुख आयात हैं, जो भारत में स्थानीय खाद्य आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायक हैं। औपचारिक और अनौपचारिक दोनों तरह के व्यापार में ये वस्तुएं शामिल हैं, और सीमा पार व्यापार के साथ-साथ समुद्री मार्गों से भी इन वस्तुओं का आदान-प्रदान होता है।

इस प्रकार, भारत म्यांमार सीमा व्यापार में फार्मास्यूटिकल, मशीनरी, वस्त्र, वाहन, कृषि उत्पाद, दलहन, लकड़ी और अन्य उपभोक्ता वस्तुओं की मात्रा एवं विविधता महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और यह व्यापार क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग और विकास में योगदान देता है।

आसियान, बीआरआई और भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों की भू-राजनीति

चीन के उदय ने वैश्विक राजनीतिक-आर्थिक परिदृश्य को महत्वपूर्ण रूप से बदल दिया है। चीन अपने बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) के एजेंडे को देश और विदेश दोनों जगह आगे बढ़ाने के लिए उत्सुक है। कुछ विद्वानों ने BRI को एक नई चीनी विश्व व्यवस्था के निर्माण के साधन के रूप में देखा है जो वर्तमान संयुक्त राज्य अमेरिका के नेतृत्व वाली वैश्विक

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 16, Issue 1 – 2026

व्यवस्था का स्थान सकती है । संक्षेप में, BRI एक चीनी वैश्विक और व्यापक रणनीति है जो पाँच प्रमुख क्षेत्रों में संपर्क को बढ़ावा देने का प्रयास करती है: नीति समन्वय, बुनियादी ढाँचा संपर्क, व्यापार सुविधा, वित्तीय सहयोग और लोगों के बीच संपर्क। इस संबंध में, बीआरआई की दृष्टि से आसियान क्षेत्र के राज्य चीन के लिए महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि चीनी पहल का उद्देश्य देश को दक्षिण पूर्व एशिया, दक्षिण एशिया, मध्य एशिया, रूस और यूरोप के साथ भूमि नेटवर्क और दक्षिण पूर्व एशिया, दक्षिण एशिया, ओशिनिया और पूर्वी अफ्रीकी तटीय क्षेत्रों के साथ समुद्री व्यापार मार्गों से जोड़ना है। परिणामस्वरूप, चीन और आसियान सदस्यों के बीच द्विपक्षीय व्यापार 2019 में 507.9 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 2024 में 982.34 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया। आसियान देशों ने क्षेत्रीय आर्थिक संपर्क, व्यापार एकीकरण और रणनीतिक सहयोग के लिए एक मास्टर प्लान शुरू किया है। आसियान सदस्य राज्यों में एक मजबूत बुनियादी ढांचा पाइपलाइन सीमा पार व्यापार और लोगों की आवाजाही को बढ़ावा देने की संभावना है। म्यांमार के पास मुख्य ऊर्जा संपत्ति के रूप में बड़े पैमाने पर कच्चा तेल और प्राकृतिक गैस है।

चित्र:1- म्यंमार-चीन पाइपलाइन

स्रोत : वेइफ़ेंग (2016 (चित्र-1 में दर्शायी गयी लाल रंग की पाइपलाइन बंगाल की खाड़ी से लेकर गुइयांग तक है तथा पिले रंग की पाइपलाइन क्याउकफ्यू से लेकर कुनमिंग तक है)

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

चीन म्यांमार के गैस और तेल संसाधनों तक पहुंच को सुरक्षित करने और मलक्का जलडमरूमध्य पर अपनी निर्भरता कम करने के लिए अपने ऊर्जा आपूर्ति मार्गों में विविधता लाने का इरादा रखता है (चित्र 1 देखें)। म्यांमार के सीमावर्ती क्षेत्र वैश्विक और क्षेत्रीय प्रभावों का केंद्र बन गए हैं। म्यांमार में चीन और भारत के महत्वपूर्ण राष्ट्रीय हित और दीर्घकालिक महत्वाकांक्षाएं हैं चूंकि बर्मा रणनीतिक रूप से भारतीय उपमहाद्वीप, दक्षिण-पश्चिमी चीन, हिंद महासागर और शेष महाद्वीपीय दक्षिण पूर्व एशिया के चौराहे पर स्थित है, इसलिए उभरते भारत और उभरते चीन दोनों ने 1980 के दशक के अंत से इस क्षेत्रीय नोड में बढ़ती रुचि पाई है। वैश्विक शक्ति में निरंतर परिवर्तन ने, विशेष रूप से म्यांमार के भू-आर्थिक और सामरिक परिदृश्य में, लंबे समय से चली आ रही चीन-भारत प्रतिद्वंद्विता को और तीव्र कर दिया है। चीन, बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) के माध्यम से, चीन-म्यांमार आर्थिक गलियारा, क्याउकफ्यू गहरे समुद्र बंदरगाह और तेल एवं गैस पाइपलाइन जैसी बड़े पैमाने की बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं को आगे बढ़ा रहा है, जिसका उद्देश्य हिंद महासागर तक पहुँच सुनिश्चित करना और दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ संबंधों को मज़बूत करना है। BRI के ऋण जोखिमों, पारदर्शिता के मुद्दों और संप्रभुता संबंधी चिंताओं—विशेषकर पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में CPEC के संबंध में—से चिंतित भारत ने अपनी एक्ट ईस्ट नीति के माध्यम से विकल्प तलाशे हैं, जिनमें कलादान मल्टी-मॉडल ट्रांजिट ट्रांसपोर्ट प्रोजेक्ट और भारत-म्यांमार-थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग जैसी परियोजनाएँ शामिल हैं। प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध और एक बफर राज्य के रूप में स्थित म्यांमार, प्रतिस्पर्धी चीनी और भारतीय प्रभाव का केंद्र बिंदु है, लेकिन इसकी सीमा अस्थिरता, जातीय विद्रोह, कमज़ोर बुनियादी ढाँचा और सीमा पार अपराध—विशेषकर सीमा पर—क्षेत्रीय संपर्क और सहयोग के लिए गंभीर चुनौतियाँ पेश करते हैं।

भारत और म्यांमार के बीच आर्थिक सहयोग में प्रमुख बाधाएँ:

भारत और म्यांमार के बीच आर्थिक सहयोग में निम्नलिखित बाधाएँ विद्यमान हैं, जो दोनों देशों के बीच व्यापार और निवेश के प्रवाह को प्रभावित करती हैं:

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

- म्यांमार में सैन्य तख्तापलट, जातीय विद्रोह, और अलगाववादी आंदोलनों के कारण राजनीतिक परिस्थितियाँ अस्थिर हैं। इस अस्थिरता ने द्विपक्षीय परियोजनाओं और निवेशों को प्रभावित किया है, जिससे भारत के व्यावहारिक सहयोग प्रयासों में अड़चनें आई हैं।

- भारत-म्यांमार सीमा क्षेत्र सीमांत और कठिन है, जहां कई बार सूथिर क्षेत्रों में अलगाववादी और सशस्त्र समूह सुरक्षित ठिकाने बनाते हैं। इन समूहों की गतिविधियाँ सीमा सुरक्षा और सुरक्षा सहयोग के लिए गंभीर बाधा हैं। इसके अलावा, मादक पदार्थों, हथियारों, और तस्करी के दौरान भी सीमा क्षेत्र में समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

- सीमा क्षेत्र में मादक पदार्थ और हथियारों की तस्करी व्यापक है, जिसके कारण औपचारिक व्यापार में बाधाएँ आती हैं और स्थानीय अर्थव्यवस्था में अवैध गतिविधियाँ बढ़ती हैं। यह क्षेत्रीय आर्थिक विकास के लिए गंभीर चुनौती है।

- सीमा पार के व्यापार के लिए आवश्यक परिवहन और व्यापारिक अवसंरचना अपर्याप्त है। कई महत्वपूर्ण परियोजनाएँ, जैसे कलादान मल्टी-मॉडल ट्रांजिट प्रोजेक्ट और भारत-म्यांमार-थाईलैंड त्रि-राष्ट्रीय हाईवे, राजनीतिक और वित्तीय कारणों से विलंबित हैं। इससे व्यापार लागत बढ़ती है और समय भी लगता है।

- म्यांमार में चीन का निवेश और प्रभाव तीव्र है, जो भारत के लिए क्षेत्रीय प्रभाव में कमी का कारण बन रहा है। चीन के बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) और चीन-म्यांमार आर्थिक गलियारे के कारण भारत को सुरक्षा और आर्थिक रूप से चुनौतियाँ झेलनी पड़ती हैं।

- नियमों और प्रक्रियाओं में जटिलता: भारत और म्यांमार के बीच व्यापार को सुगम बनाने के लिए आवश्यक नियम-कानून और दस्तावेजीकरण में पेचीदगियाँ और उच्च लेनदेन लागत हैं, जो व्यापार को औपचारिक रूप देने में बाधक हैं।

- जनजातीय और सामाजिक कारक: सीमा के दोनों ओर रहने वाले जनजातीय समुदायों की गतिशील सामाजिक और सांस्कृतिक स्थितियां, साथ ही सीमित स्थानीय विकास, आर्थिक सहयोग के लिए चुनौतियाँ उत्पन्न करती हैं।

ये बाधाएँ भारत-म्यांमार आर्थिक सहयोग को प्रभावित करती हैं, परन्तु दोनों देशों के बीच सहयोग की संभावनाएँ मजबूत हैं। सुरक्षा सुधार, अवसंरचना विकास, तथा नीति समन्वय के

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

द्वारा इन चुनौतियों का समाधान किया जा सकता है। भारत की "एक्ट ईस्ट" नीति और क्षेत्रीय परियोजनाएँ इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

सुझाव और नीतिगत सिफारिशें

भारत और म्यांमार के बीच आर्थिक सहयोग को बढ़ाने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए जा सकते हैं:

- सीमा पार व्यापार और आर्थिक सहयोग को बेहतर बनाने के लिए सड़क, रेलवे, पोर्ट, और लॉजिस्टिक्स जैसे आधारभूत ढाँचे का विस्तार एवं गुणवत्ता में सुधार आवश्यक है। कार्यशील परियोजनाओं जैसे कलादान मल्टी-मॉडल ट्रांजिट प्रोजेक्ट और भारत-म्यांमार-थाईलैंड त्रि-राष्ट्रीय हाईवे को समय पर पूरा करना चाहिए।
- सीमांत क्षेत्र में सुरक्षा व्यवस्था सुदृढ़ कर, असंतोष और मादक पदार्थ तस्करी, हथियारों की खेप, और अवैध गतिविधियों को रोकना होगा। इससे व्यापारिक पर्यावरण सुरक्षित बनेगा और औपचारिक आर्थिक लेनदेन को बढ़ावा मिलेगा।
- दोनों देशों के बीच व्यापार को सुगम बनाने हेतु सीमा शुल्क, दस्तावेजीकरण और प्रक्रियाओं में पारदर्शिता और सरलता लाना आवश्यक है। डिजिटल व्यापार मंचों और सीमा पर एकीकृत कसौटी व्यवस्था से व्यापार प्रक्रिया तेज एवं स्वच्छ हो सकती है।
- द्विपक्षीय एवं क्षेत्रीय प्लेटफार्मों पर बेहतर संवाद और समन्वय कर आर्थिक सहयोग की रणनीतियों को सुदृढ़ बनाना होगा। क्षेत्रीय स्थिरता बनाए रखते हुए नीतिगत साझा पहलें करनी चाहिए।
- चीन जैसे बाहरी प्रभावों के संदर्भ में भारत को अपनी नीति और परियोजनाओं को और प्रभावी बनाना चाहिए ताकि क्षेत्रीय सामरिक और आर्थिक हितों की रक्षा हो सके।
- सीमा क्षेत्र के आदिवासी और स्थानीय समुदायों के आपसी संबंधों को मजबूत कर, सामाजिक समरसता को बढ़ाना तथा आर्थिक सहयोग के सामाजिक आधार को सुदृढ़ करना।
- म्यांमार में भारतीय निवेश को बढ़ावा देने के लिए निवेश वातावरण को सुरक्षित और सहायक बनाया जाना चाहिए। इसके साथ ही साझा तकनीकी एवं औद्योगिक परियोजनाएं स्थापित कर आर्थिक एकीकरण को गहरा किया जा सकता है।
- नीति-निर्माताओं को चीन-भारत प्रतिद्वंद्विता के विवादास्पद मुद्दे के बजाय व्यापार व्यवस्था के विकास और अंतर-राज्यीय सहयोग पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

इन प्रयासों से भारत-म्यांमार के बीच आर्थिक सहयोग को व्यापक और स्थिर आधार पर बढ़ाया जा सकता है, जो दोनों देशों के विकास एवं क्षेत्रीय समृद्धि के लिए लाभप्रद होगा।

निष्कर्ष

इस पत्र में तर्क दिया गया है कि भारत और म्यांमार सीमा पार व्यापार और आर्थिक सहयोग में तेजी से शामिल हो रहे हैं। भारतीय विदेश नीति और आर्थिक अभिविन्यास में बदलाव - "लुक ईस्ट" से "एक्ट ईस्ट" नीति - ने भारत और म्यांमार के सीमावर्ती क्षेत्रों के साथ सीमा पार क्षेत्रों के उद्भव में बहुत योगदान दिया है। भारतीय केंद्र सरकार के व्यापक उद्देश्य और लक्ष्यों के साथ सीमा व्यापार को सुविधाजनक बनाने की इच्छुक है। हालाँकि, सीमा पार आर्थिक सहयोग में बहुत-सी बाधाएँ हैं। पहला म्यांमार में चीन-भारत प्रतिद्वंद्विता का मुद्दा है। भारत और चीन दोनों म्यांमार के सीमावर्ती क्षेत्रों को राजनीतिक, आर्थिक और रणनीतिक लाभ के लिए प्रभावित करने की होड़ में हैं। लेकिन, अनसुलझे सीमा मुद्दों के कारण भारत बीआरआई में शामिल होने के प्रति उदासीन या अनिच्छुक बना हुआ है। इसके अलावा, भारत के पूर्वोत्तर सीमावर्ती क्षेत्र सामाजिक-आर्थिक रूप से पिछड़े हैं और उनमें बुनियादी ढाँचा कमज़ोर है। सीमावर्ती क्षेत्रों में उग्रवादियों की गतिविधियाँ सीमा व्यापार के लिए चुनौतियाँ और ख़तरा पैदा कर सकती हैं। यदि मौजूदा परियोजनाओं को समय पर पूरा किया जाए और व्यापार सुगमता में सुधार किया जाए, तो म्यांमार भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र को दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ स्थायी और गहरे आर्थिक एकीकरण का मार्ग प्रदान कर सकता है।

सन्दर्भ सूचि

आनंद एन.डी., और कुमार एन.डी. एस. (2024)। गठबंधन की सरकार और विकसित भारत 2047 की संकल्पना। जर्नल ऑफ एडवांसेज एंड स्कॉलरली रिसर्चेस इन एलाइड एजुकेशन, 21(6), 27-34। https://doi.org/10.29070/e3cjq114

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

दीपक कुमार और डॉ संजय कुमार (2024। शीतयुद्ध के बाद भारत-अमेरिका संबंध और चीन। जर्नल ऑफ एडवांसेज एंड स्कॉलरली रिसर्चेस इन अलाइड एजुकेशन, 21(6), 32-41। https://doi.org/10.29070/wzb7ac15

यूरोपीय आयोग, व्यापार महानिदेशालय (2024), *यूरोपीय संघ, म्यांमार के साथ माल का व्यापार,*

ऑनलाइन:< http://trade.ec.europa.eu/doclib/docs///2006/september/tradoc_113423.pdf > (4 नवंबर 2024।

भारत सरकार, वाणिज्य विभाग (2024), *निर्यात आयात डेटा बैंक,* ऑनलाइन: < http://commerce.nic.in/eidb/default.asp > (5 नवंबर 2024।

हर्ष वी पंत और श्रीपर्णा बनर्जी (2024) सीमा सुरक्षा का विश्लेषण: भारत-म्यांमार सीमा पर एफएमआर के पक्ष और विपक्ष प्रभाव और नीति अनुसंधान संस्थान । म्यांमार के साथ सीमाओं की बाड़ लगाना: भारत-म्यांमार सीमा पर एफएमआर के लाभ और चुनौतियां' शीर्षक

सैसिन, ए., सोमबूनबूराना, एस., लैशराम, आर. एस., और चैसिंगकानानोंट, एस. (2023)। भारत के मणिपुर राज्य के मोरेह कस्बे में प्रतिभूतिकरण और म्यांमार राजनीतिक संघर्ष का प्रभाव। वैश्वीकरण में अनुसंधान, 7, 100150. https://doi.org/10.1016/j.resglo.2023.100150

अजित (2023) 21वीं सदी में भारत-म्यांमार संबंध: एक अध्ययन, राजस्थली जर्नल

खाइन, एन. ए., कुंडू, के., मलिक, डी., और देवी, एम. (2022)। भारत और म्यांमार में दलहन उत्पादन और व्यापार प्रदर्शन। कृषि विज्ञान डाइजेस्ट - एक शोध पत्रिका, https://doi.org/10.18805/ag.d-5479

पेगू, एन. (2022). सीमा व्यापार: भारत की एक्ट ईस्ट नीति, जिसमें मोरेह स्थित भारत-म्यांमार व्यापार बिंदु पर विशेष बल दिया गया है। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च एंड ग्रोथ इवैल्यूएशन, 363-368. https://doi.org/10.54660/anfo.2022.3.4.16

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 16, Issue 1 – 2026

JOURNAL OF EAST-WEST THOUGHT

UGC CARE I

शेफर्ड, सी. आर., गोमेज़, एल., सिरीवत, पी., और निजमान, वी. (2022)। म्यांमार में वन्यजीव संरक्षण: मांस, दवा और ट्रॉफियों के लिए जंगली भेड़ों और बकरियों का व्यापार, चीन, भारत और थाईलैंड से जुड़ा हुआ है। यूरोपियन जर्नल ऑफ वाइल्डलाइफ रिसर्च, 68(6)। https://doi.org/10.1007/s10344-022-01622-6

गोट्सचिलच, पी. (2015). भारत-म्यांमार द्विपक्षीय संबंधों में नए विकास? *जर्नल ऑफ करेंट साउथईस्ट एशियन अफेयर्स, 34* (2), 139-163. https://doi.org/10.1177/186810341503400206 (मूल कार्य 2015 में प्रकाशित)

जैकब जयंत (2014), 'लुक ईस्ट' नीति अब 'एक्ट ईस्ट' है, *हिंदुस्तान टाइम्स* में, 4 अक्टूबर, ऑनलाइन: < www.hindustantimes.com/india-news/nda-aims-at-deeper-engagement-with-asian-countries/article1-1271765.aspx > (4 नवंबर 2014।

अनेजा अतुल (2014), चीन ने शी जिनपिंग की यात्रा से पहले 'सिल्क रोड' पर अपनी बात बढ़ाई, *द हिंदू* में, 13 सितंबर, ऑनलाइन: < www.thehindu.com/news/china-amplifies-pitch-on-maritime-silk-road-ahead-of-xi-visit/article6407359.ece > (17 सितंबर 2014।

चटर्जी मिलर मंजरी (2013), भारत की कमजोर विदेश नीति: एक भावी महाशक्ति अपने स्वयं के उदय का विरोध करती है, *विदेश मामले*, 92, 3, 14-19.

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved